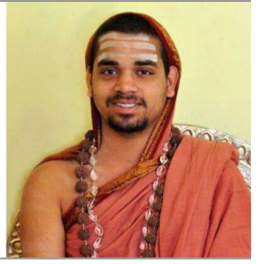


Voice of Jagadguru

advaitam paramanandam



an e-magazine on advaita



अनुग्रह भाषण

काम करने की ज़रूरत और ईश्वर की कृपा

जीवन में आगे बढ़ने के लिए इंसान को अपनी कोशिशों और ईश्वर की कृपा, दोनों की ज़रूरत होती है। जो व्यक्ति अपना काम ठीक से करता है और ईश्वर की कृपा के लिए प्रार्थना करता है, वह सही रास्ते पर चलता है। कुछ लोग बिना अपना कर्तव्य निभाए ही इच्छाएं पालते हैं और ईश्वर की कृपा के लिए प्रार्थना करते हैं। अगर नतीजा बुरा होता है, तो वे ईश्वर को दोष देते हैं। ऐसी सोच एक गलतफहमी की वजह से पैदा होती है।



सबसे पहले, इंसान को अपना कर्तव्य अच्छी तरह समझना चाहिए, उसे एक पवित्र काम मानकर अपनाना चाहिए, सही कोशिश करनी चाहिए और अपना कर्म करना चाहिए। काम शुरू करने से पहले और उसे पूरा करने के बाद ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए। यही सही तरीका है।

कुछ लोग सोच सकते हैं कि जब वे अपनी बुद्धि से कोई काम पूरा कर सकते हैं, तो उन्हें ईश्वर की कृपा की ज़रूरत नहीं है। ऐसी सोच कभी नहीं रखनी चाहिए। सफलता के लिए ईश्वर की कृपा और अपनी कोशिश, दोनों ही ज़रूरी हैं, ठीक वैसे ही जैसे गाड़ी अपने दोनों पहियों की मदद से चलती है।

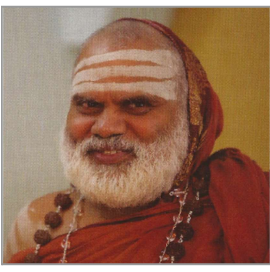
यहाँ तक कि जंगल में सोए हुए शेर को भी बिना कोशिश और ज़रूरी शिकार कौशल के अपना शिकार नहीं मिलता। अगर कोई इस बात को अच्छी तरह समझ ले, कड़ी मेहनत करे और ईश्वर की कृपा के लिए प्रार्थना करे, तो उसके शुरू किए गए काम निश्चित रूप से सफल होंगे।

उद्यमेनैव सिद्ध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः ।

न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मखे मृगाः ॥

--जगद्गुरु शंकराचार्य परम पूज्य महासन्निधानं श्री श्री श्री भारती तीर्थ महास्वामीजी

We submit our efforts at the Lotus feet of Jagadguru Śankarācārya His Holiness Mahāsannidhānam Śrī Śrī Śrī Bhārati Tīrtha Mahāswāmiji and Jagadguru Śankarācārya His Holiness Sannidhānam Śrī Śrī Śrī Vidhuśekhara Bhārati Mahāswāmiji

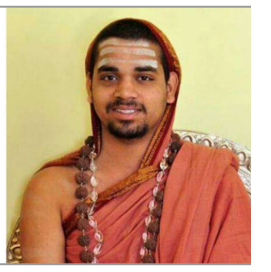


Voice of Jagadguru

advaitam paramanandam



an e-magazine on advaita



॥आत्मबोधः॥

॥ātmabodhaः॥

तत्त्वस्वरूपानुभवादुत्पन्नं ज्ञानमंजसा

अहं ममेति चाज्ञानं बाधते दिग्भ्रमादिवत् ॥४६॥

'मैं' और 'मेरा' वाली अज्ञानता, आत्मा के वास्तविक स्वरूप के ज्ञान से नष्ट हो जाती है; ठीक वैसे ही जैसे सही जानकारी दिशाओं के बारे में गलतफहमी को दूर कर देती है।

सम्यग्विज्ञानवान् योगी स्वात्मन्येवाखिलं जगत्
एकं च सर्वमात्मानमीक्षते ज्ञानचक्षुषा ॥४७॥

पूर्ण आत्म-साक्षात्कार और ज्ञान प्राप्त योगी अपनी "ज्ञान-दृष्टि" (ज्ञान-चक्षु) से पूरे ब्रह्मांड को अपने ही स्वरूप में देखता है और बाकी सब कुछ को भी अपना ही स्वरूप मानता है, और कुछ नहीं।

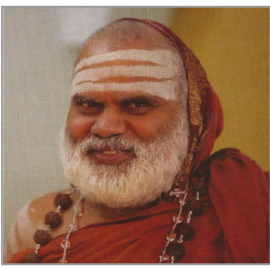


परम पूज्य ३५वें जगद्गुरु
शंकराचार्य श्री अभिनवविद्या
तीर्थ महास्वामीजी

आत्मैवेदं
जगत्सर्वमात्मनोऽन्यन्न विद्यते
मृदो यद्वदघटादीनि स्वात्मानं
सर्वमीक्षते ॥४८॥

आत्मा के अलावा और कुछ भी अस्तित्व में नहीं है; यह दृश्यमान ब्रह्मांड वास्तव में आत्मा ही है। जैसे घड़े और मटके असल में मिट्टी से बने होते हैं और उन्हें मिट्टी के अलावा कुछ और नहीं कहा जा सकता, वैसे ही ज्ञानी आत्मा के लिए जो कुछ भी दिखाई देता है, वह स्वयं 'आत्मा' ही है।

(जारी रहेगा...)

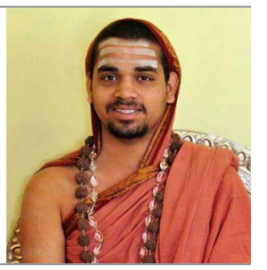


Voice of Jagadguru

advaitam paramanandam



an e-magazine on advaita



धर्मशास्त्र का मार्ग

इस भाग में हम प्रश्नोत्तर रूप में "धर्मशास्त्र का मार्ग" देखेंगे। "धर्मशास्त्र" से संबंधित हमारी शंकाओं के समाधान के लिए, पूज्यश्री स्वामी ओंकारानंद सरस्वती, संस्थापक आचार्य, श्री स्वामी चिद्धवानंद आश्रम, वेदपुरी, थेनी, वैदिक शास्त्रों के अनुसार हमारा मार्गदर्शन करेंगे।

सवाल: स्वामीजी, गुरु-शिष्य परंपरा के ज़रिए शास्त्र सीखने की सलाह क्यों दी जाती है?

स्वामीजी: गुरु अपने शिष्य को प्रेरित और समर्थ बनाते हैं ताकि वह स्पष्टता के साथ वही सीख सके जो गुरु ने अपने गुरु से सीखा था। गुरु के साथ रहने और उन्हें देखने से, शिष्य अनौपचारिक शिक्षा के ज़रिए कई बातें सीख जाता है। गुरु कई मुश्किल सवालों को आसानी से सुलझा देते हैं। गुरु का आशीर्वाद कई ऐसे फ़ायदे देता है जो दिखाई नहीं देते। "गुरु तो गुरु ही होते हैं।" 'गु' अक्षर का अर्थ है अंधकार, और 'रू' अक्षर का अर्थ है उसे दूर करने वाला। अज्ञान के अंधकार को दूर करने की शक्ति के कारण ही उन्हें गुरु कहा जाता है। (अद्वय तारक उपनिषद्, श्लोक 16)।

'शिष्य' शब्द 'शिक्षा' से बना है, जिसका अर्थ है ज्ञान प्राप्त करना या खुद को तैयार करना। शिष्य अपनी इंद्रियों को अनुशासित करता है, गुरु की सेवा करता है और उस ज्ञान को प्राप्त करता है जो अज्ञान को दूर करता है। परंपरा का अर्थ है एक अटूट सिलसिला।

गुरु महिमा:

श्री आदि शंकराचार्य ने 'सर्व-वेदांत-सिद्धांत-सार-संग्रह' में गुरु-शिष्य के बारे में बताया है। गुरु वह है जो अपने गुरु से सीखे गए शास्त्रों के श्लोकों और मंत्रों का अर्थ जानता है, शुद्ध चेतना के ज्ञान में दृढ़ रहता है और मन को शांत रखता है; जो 'मैं' और 'मेरा' की भावना से मुक्त है, राग-द्वेष से परे समभाव रखता है, भौतिक संपत्ति जमा नहीं करता, सादा जीवन जीता है, किसी से कोई अपेक्षा नहीं रखता, भीतर और बाहर से पवित्र है, कोई भी कार्य करने में सक्षम है और असीम कृपा बरसाता है। वह इन सभी गुणों से संपन्न और ज्ञानियों में श्रेष्ठ होता है। परम सत्य को जानकर शांतिपूर्ण और सुखी जीवन जीने के लिए, मनुष्य को उनकी पूजा करने, उनसे जुड़ने और उनकी सेवा करने का पूरा प्रयास करना चाहिए।

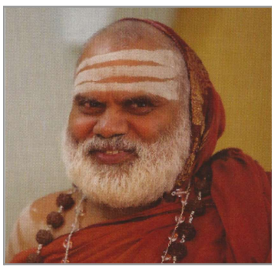


(Jagadguru Śankaracārya His Holiness Mahāsannidhānam Śrī Śrī Śrī Bhārati Tīrtha Mahāswāmiji and Pujyasri Swami Omkarananda Saraswati, Founder Acharya, Śrī Swami Chidbhavananda Ashram @ Vedapuri, May 31-June 1, 2012 Vijaya Yatra.)

(जगद्गुरु शंकराचार्य परम पूज्य महासन्निधानं श्री श्री श्री भारती तीर्थ महास्वामीजी,

और

पूज्यश्री स्वामी ओंकारानंद सरस्वती, संस्थापक आचार्य, श्री स्वामी चिद्धवानंद आश्रम @ वेदपुरी, मई 31 - जून 1, 2012 विजय यात्रा)

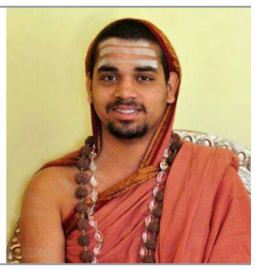


Voice of Jagadguru

advaitam paramanandam



an e-magazine on advaita



अगर हम कई जन्मों तक वेदों में बताए अनुसार लगातार भक्ति भाव से ईश्वर की पूजा करते हैं, तो ईश्वर ऐसी पूजा को स्वीकार करते हैं और गुरु के रूप में हम पर कृपा करते हैं। गुरु हमें अद्वैत शुद्ध चेतना के सिद्धांत को आसानी से समझ में आने वाले तरीके से सिखाते हैं। इस तरह, वे हमें दुख भरे जन्म-मरण के चक्र या बंधन के सागर को पार करने में मदद करते हैं। तमिल कवि श्री तयुमानवर गाते हैं कि जिसने ईश्वर की पूजा की है और तीर्थयात्राएं की हैं, उसे गुरु का आशीर्वाद मिलता है।

इसलिए, ईश्वर की पूजा से पुण्य मिलता है और वह पुण्य तब फल देता है जब वे गुरु के रूप में आते हैं। यह जानकर, लगातार पूजा और गुरु के प्रति अटूट प्रेम से हमें उनकी शिक्षा का आशीर्वाद मिलता है, जो हमें बंधन के दुखों से ऊपर उठाती है।

शास्त्र खुद से सीखने के बारे में क्या कहते हैं? मुंडकोपनिषद् कहता है: अविद्यायामन्तरे वर्तमानाः स्वयं धीराः पण्डितं मन्यमानाः। जङ्घन्यमानाः परियन्ति मूढा अन्धेनैव नीयमाना यथाऽन्धाः॥ (1.2.8)

परीक्ष्य लोकान् कर्मचितान् ब्राह्मणो निर्वेदमायान्नास्त्यकृतः कृतेन। तद्विज्ञानार्थं स गुरुमेवाभिगच्छेत् समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठम्॥ (1.2.12)

गुरु के बिना खुद से सीखना वैसा ही है जैसे एक अंधा दूसरे अंधे को रास्ता दिखाए, और इससे कोई लाभ नहीं होता। जबकि साधना मार्ग, यानी ब्रह्म तक पहुँचने का रास्ता या आध्यात्मिकता का मार्ग, गुरु या आध्यात्मिक शिक्षक के माध्यम से ही तय किया जाता है।

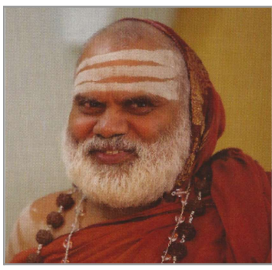
सवाल: आजकल हम देखते हैं कि बहुत से लोग सोशल मीडिया और किताबों का इस्तेमाल करते हैं या अलग-अलग विचारधाराओं वाले स्कूलों में जाकर शास्त्र सीखते हैं; क्या यह सही है।

स्वामीजी: एक योग्य आध्यात्मिक साधक को किसी योग्य जीवित गुरु से पूरी निष्ठा और निरंतरता के साथ शास्त्र सीखने चाहिए। यह सबसे महत्वपूर्ण है। हालाँकि 'उपनिषद्' शब्द का अर्थ गुरु के निकट रहकर सीखना है, लेकिन आज की दुनिया में तकनीक का इस्तेमाल करना गलत नहीं है। एक योग्य साधक, जिसमें गुरु के प्रति अटूट और गहरी भक्ति हो और जो सीखते समय यह भाव रखे कि गुरु साक्षात् उपस्थित हैं, वह इस तरह से अध्ययन कर सकता है; बशर्ते वह एक ही गुरु से और उनकी परंपरा (संप्रदाय) का पालन करते हुए कम से कम तीन साल तक लगातार अध्ययन करे। साथ ही, छात्र को समय-समय पर गुरु से व्यक्तिगत रूप से मिलकर उनका आशीर्वाद भी लेना चाहिए।

सवाल: कई लोग अपनी सुविधा के हिसाब से पूजा, श्राद्ध वगैरह के तरीकों में बदलाव करके उन्हें करते हैं। क्या यह सही है?

स्वामीजी: श्राद्ध पूरी श्रद्धा के साथ और परिवार की परंपरा के अनुसार ही किया जाना चाहिए। 'श्राद्ध' शब्द खुद 'श्रद्धा' से ही बना है। पूजा भी वैसे ही करनी चाहिए जैसे शुरू से की जाती रही है। दोनों ही मामलों में भावना सबसे ज़्यादा ज़रूरी है। सुविधा के आधार पर बदलाव करना सही नहीं होगा, लेकिन क्षमता के आधार पर बदलाव ठीक हो सकता है; हालाँकि, इसे बहाना नहीं बनाना चाहिए।

सवाल: कर्मनुष्ठान का क्या महत्व है?

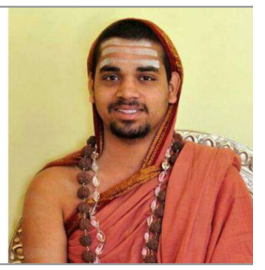


Voice of Jagadguru

advaitam paramanandam



an e-magazine on advaita



स्वामीजी: धर्म ही कर्म का रूप है। हमारे शास्त्र कहते हैं कि सुबह से रात तक हम जो भी काम सोच, बोली और कर्म के ज़रिए करते हैं, उन्हें सही दिशा में किया जाना चाहिए। अपने सभी कामों को सही तरीके से करना ही कर्मानुष्ठान है।



कर्म से धर्म यानी पुण्य मिलना चाहिए, जो दिखाई नहीं देता।

इसलिए, कर्मानुष्ठान का अर्थ रीति-रिवाज़ या अनुष्ठान भी हो सकता है। इन अनुष्ठानों को करने से ऐसे फ़ायदे और शक्तियाँ मिलती हैं जो दिखाई नहीं देतीं। इसे तर्क से नहीं समझाया जा सकता, लेकिन यह जीवन भर काम आता है। जब हम यह बात समझते हैं, तो इसका महत्व और बढ़ जाता है। भले ही किसी को ये अनुष्ठान करने में मुश्किल हो, फिर भी हमें पूरी श्रद्धा के साथ इनका पालन करना चाहिए।

नियमों का पालन करने से मन अनुशासित होता है और पसंद-नापसंद को

सही दिशा मिलती है; साथ ही, प्रयासों के दौरान सुख और दुख के प्रति समभाव विकसित होता है। दूसरे शब्दों में, इससे वैराग्य (स्थायी और अस्थायी के बीच भेद करने की क्षमता), शम (विचारों पर नियंत्रण), दम (इंद्रियों पर नियंत्रण), उपरति (त्याग की भावना) और तितिक्षा (बिना किसी शिकायत के सभी शारीरिक और मानसिक कष्टों को सहने की क्षमता) विकसित करने में मदद मिलती है। ये सभी आध्यात्मिक अध्ययन के लिए ज़रूरी योग्यताएँ हैं। इसलिए, कर्मानुष्ठान मानव जीवन के उद्देश्य को प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़ने का एक मार्ग है। यही इसका महत्व है।

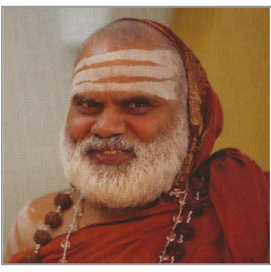
जगद्गुरु शंकराचार्य परम पूज्य श्रीसन्निधानं श्री श्री श्री विधुशेखर भारती महास्वामीजी और पूज्यश्री स्वामी ओंकारानंद सरस्वती, संस्थापक आचार्य, श्री स्वामी चिद्धवानंद आश्रम @ वेदपुरी, अप्रैल 15 - 17, 2017 (विजय यात्रा)

सवाल: कई लोग कहते हैं कि चूँकि वे वेदांत पढ़ रहे हैं और उसमें या वेदांत की परंपरा में बहुत योग्य हैं, इसलिए उन्हें रोज़ पूजा, संध्यावंदन, पितृ-श्राद्ध आदि करने की ज़रूरत नहीं है। क्या यह सही है?

स्वामीजी: नहीं, यह पूरी तरह सही नहीं है। जो लोग ब्रह्मचर्य या गृहस्थाश्रम (गृहस्थ जीवन) में हैं, उनके लिए पूजा, संध्यावंदन, पितृ-श्राद्ध आदि करना ज़रूरी है। गृहस्थों को अगली पीढ़ी को धर्मशास्त्र के सही रास्ते पर ले जाना चाहिए, इसलिए ऐसे रीति-रिवाजों को छोड़ना धर्मशास्त्र के अनुसार नहीं होगा। साथ ही, इन्हीं कामों को करने से मिलने वाले फल से ही शास्त्रों की हमारी समझ बेहतर होती है।

इसके बाद का चरण है धीरे-धीरे गृहस्थाश्रम (पारिवारिक जीवन) से हटकर संन्यास की ओर बढ़ना। वहाँ कर्म कम किए जा सकते हैं, लेकिन पूरी तरह छोड़े नहीं जा सकते। बाहरी पूजा में लगने वाले समय की जगह धीरे-धीरे वेदांत शास्त्रों के अध्ययन में समय दिया जाता है, जिसे ज्ञान-यज्ञ कहते हैं। उसके बाद, विचारों और इंद्रियों पर नियंत्रण रखते हुए, अपना पूरा समय वेदांत के अध्ययन में लगाना शास्त्र के अनुसार सही माना गया है। इसे ही संन्यास या त्याग कहते हैं। विविदिषा संन्यास में भी छोटे-मोटे रीति-रिवाज होते हैं, लेकिन विद्वत् संन्यास में नहीं। यह अध्ययन सिर्फ़ बौद्धिक अभ्यास नहीं है। इसके लिए ईश्वरीय कृपा की ज़रूरत होती है।

(जारी रहेगा..)

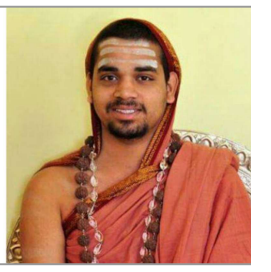


Voice of Jagadguru

advaitam paramanandam



an e-magazine on advaita



GOLDEN SAYINGS OF JAGADGURU ŚRĪ ĀDI ŚANKARĀCHARYA

जगद्गुरु श्री आदि शंकराचार्य की सुनहरी बातें

श्लोक: यदा एव इन्द्रियाणां स्थिरा धारणा तदानीम् एव निरङ्कुशम् अप्रमत्तत्वम् ।

आचार्य की टिप्पणी: स्पष्ट जागरूकता तभी संभव है जब इंद्रियों को स्थिर रखा जाए।

--- कठोपनिषद् 2.3.11



जाएगा।

श्लोक : सोऽपि मायी परमेश्वरो मायोपाधिसन्निधेः तद्वान् इव कार्यभूतैः देहादिभिः तद्वदेव विभक्तैः वा विभक्त ईश्वरादिरूपेण अवतिष्ठते ।

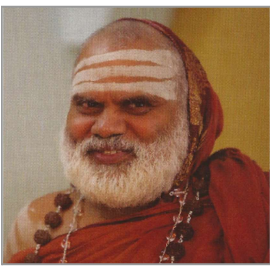
आचार्य की व्याख्या: वे, यानी परमेश्वर और माया के स्वामी, माया के बहुत करीब होने के कारण माया से युक्त प्रतीत होते हैं; माया उन्हें सीमित करती है और वे शरीर आदि धारण करते हैं, जो माया के ही परिणाम हैं और विभिन्न वस्तुओं के कारण ईश्वर आदि के रूप में विविध रूपों में प्रकट होते हैं।

--- श्वेताश्वतरोपनिषद् 1.9

श्लोक : न हि दृष्टान्तदार्ष्टान्तिकयोः क्वचित् कञ्चिद् विवक्षितांशं मुक्त्वा सर्वसारूप्यं केनचिद् दर्शयितुं शक्यते। सर्वसारूप्ये हि दृष्टान्त-दार्ष्टान्तिकभावोच्छेद एव स्यात् ।

आचार्य की व्याख्या: उदाहरण और जिस चीज़ का उदाहरण दिया जा रहा है, उनके बीच किसी एक/कुछ समानता के अलावा हर तरह से बराबरी नहीं दिखाई जा सकती। क्योंकि अगर ऐसी पूरी समानता हो, तो उदाहरण और जिस चीज़ का उदाहरण दिया जा रहा है, उनके बीच का संबंध ही खत्म हो

---ब्रह्म-सूत्र 3.2.20

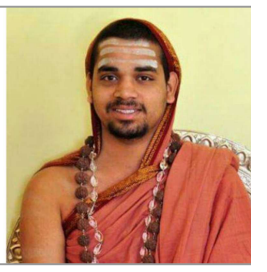


Voice of Jagadguru

advaitam paramanandam



an e-magazine on advaita



Our Website link : <https://voiceofjagadguru.com/voj/>

Telegram Channel : <https://t.me/voiceofjagadguru>

Instagram Channel :

https://www.instagram.com/stories/voice_of_jagadguru_voj/3601249542534134684?igsh=MW90YW13N2c5b2hqaA==

WhatsApp Community Channel: <https://chat.whatsapp.com/Ly4wlaTu8Kc3sjjEYU8KGu>

YouTube Channel : <https://youtube.com/@jagad-guru-channel?si=brkLFqiz8sZJ6UII>

Editorial Board		
Sri P A Murali	Hon' Advisor	Administrator & CEO, Sri Sringeri Mutt & It's Properties, Sringeri
Sri S N Krishnamurthy	Hon' Editor	Sri Sringeri Mutt, Sringeri
Sri Tangirala Shiva Kumara Sharma	Hon' Editor	Sri Sringeri Mutt, Sringeri
Sri B Vijay Anand Smt B Srimathi Veeramani	Web Director Web Asst Director & Chief Editor	Coimbatore Tirunelveli
Sri K M Kasiviswanathan	Hon' Editor	Tirunelveli
Sri M Venkatachalam & Team	Translator/writer	Tiruvananthapuram